उस्ताद अलाउद्दीन खाँ के कुछ प्रमुख शिष्यों का संगीत के क्षेत्र में योगदान

शुभम वर्मा
शोध छात्र
सी0एस0जे0एम0 वि0वि0, कानपुर

सारांश

उस्ताद अलाउद्दीन खाँ ने अपनी मेधा शक्ति व सृजनात्मक क्षमता से भारतीय संगीत की समृद्धि में बहुत बड़ा योगदान प्रदान किया। वाद्य संगीत के क्षेत्र में केन्द्र सरकार ने उनके द्वारा किये गये योगदान के आधार पर उनको सर्वप्रथम पद्मभूषण सन् 1958 में व सन् 1971 में पद्मविभूषण से सम्मानित किया गया। उन्होंने अपनी कठोर साधना के द्वारा भारतीय वाद्य संगीत को इतनी गहनता से प्रभावित किया कि उन्हें वाद्य संगीत का 'युगान्तकारी' परिवर्तक की संज्ञा प्रदान की गई। उन्होंने अपने शिष्यों को पूरी लगन व परिश्रम से प्रशिक्षित किया और आज वे सभी शिष्य पूरे विश्व में संगीत का प्रचार–प्रसार कर रहे हैं। उनके प्रमुख शिष्य इस प्रकार हैं– 1. अन्नपूर्णा देवी 2. उस्ताद अलाउद्दीन खाँ 3. भारतरत्न पं0 रविशंकर 4. श्री निखिल बनर्जी 5.पं0 पन्ना लाल घोष

श्रीमती अन्नपूर्णा देवी–

उस्ताद अलाउद्दीन खाँ की सुपुत्री व शिष्या श्रीमती अन्नपूर्णा देवी ने सुरबहार वादिका के रूप में काफी ख्याति अर्जित की थी। इनमें संगीत की प्रतिभा जन्म से ही थी। अन्नपूर्णा जी ने अपने पिता से गायन व सितार की शिक्षा ली और इसके बाद सुरबहार का अभ्यास प्रारम्भ किया। खाँ साहब इनको साक्षात् सरस्वती कहा करते थे कि ''अन्नपूर्णा अली अकबर और रविशंकर से किसी प्रकार कम नहीं है। ध्रुपद अंग की जो मेरी शिक्षा, वह सब मैने उसे दे दी है, मेरी विद्या अन्नपूर्णा के पास है।''

वास्तव में जिन लोगों ने अन्नपूर्णा का सुर बहार वादन सुना, उन लोगों ने बहुत सराहना की। इस संदर्भ में श्री लक्ष्मी नारायन गर्ग ने लिखा है– ''बाबा की सुपुत्री श्रीमती अन्नपूर्णा पर बाबा का विशेष अनुराग था। श्रीमती अन्नपूर्णा में बाल्यकाल से यह गुण विद्यमान था कि वे किसी भी चीज की तुरन्त नकल कर दिया करती थी।''[1]

विवाह के बाद अन्नपूर्णा जी अपने पति रविशंकर के साथ 'इप्टा संस्था' में भारत भ्रमण को निकल पड़ी। इप्टा की ओर से पं0 जवाहर लाल नेहरू की 'डिस्कवरी आफ इण्डिया' मंच पर अभिनीत की जा रही थी। इसमें अन्नपूर्णा जी ने पंडित जी के साथ पार्श्व संगीत दिया था। सन् 1946 से 1955 तक आपने पं0 रविशंकर जी के साथ कई जुगलबंदी के कार्यक्रम दिल्ली और बम्बई में दिये। आपने संगीत की शिक्षा कई अनेक शिष्यों को दी जिनमें सबसे मुख्य बाँसुरी वादक पद्मविभूषण पं0 हरि प्रसाद चौरसिया जी हैं।

पं0 रविशंकर जी ने अपनी पुस्तक राग–अनुराग में उनकी वादन कला के विषय में इस प्रकार लिखा है– ''यदि किसी ने भारत में रीति व पद्धति के अनुसार सुरबहार बनाया है तो वह एकमात्र अन्नपूर्णा हैं। राग की शुद्धता ध्रुपद अंग, आलापचारी एवं जोड़ जो हृदय को छू लेने वाले होते हैं, एकमात्र वही बजाती हैं। अन्नपूर्णा के बजाने के सम्बन्ध में यही कह सकता हूँ कि वह अति उच्च स्तर का बजाती हैं। कुछ लोगों के रक्त में ही संगीत होता है उनके सुर व हाथ में बहुत मिठास है, रस से भरा हुआ है। बाबा से जिन अंगों को उन्होंने सीखा उसे बिना किसी गलती के वैसा का वैसा ही ग्रहण किया है।''[2]

अन्नपूर्णा जी ने अपने पिता से जो शिक्षा प्राप्त की थी उसका प्रचार व प्रसार करने के उद्देश्य से आपकी अध्यक्षता में सन् 1975 को बम्बई में आचार्य अलाउद्दीन, म्यूजिक सर्किल की स्थापना की।

About her Baba once said, "I have taught Annapurna my entire dhrupad style and yet, she has never used her art as a profession for earning money. She plays on Surbahar every morning as a medium of worship. She is a true devotee of music."[3]

उस्ताद अली अकबर खाँ–

उस्ताद अली अकबर खाँ उस्ताद अलाउद्दीन खाँ के इकलौते सुपुत्र जो विश्वविख्यात सरोद वादक हुए।

सन् 1936 में 14 वर्ष की आयु में आपने अपना प्रथम कार्यक्रम इलाहाबाद में बहुत बड़ी जनसंख्या के समक्ष दिया। 30 वर्ष की आयु में जोधपुर महाराजा ने इनकी वादन कुशलता से प्रसन्न होकर इन्हें उस्ताद की उपाधि प्रदान की। सन् 1956 में कलकत्ता में इन्होंने संगीत की विधिवत

शिक्षा प्रदान करने के लिए 'अली अकबर कॉलेज ऑफ म्यूजिक' की स्थापना की। अपने पिता की भाँति आपने भी भारतीय संगीत जगत को अनेक शिष्य दिये हैं, इनमें से कुछ शिष्य जिन्होंने इनके पिता से भी सीखा व इनसे भी। उनमें प्रमुख रूप से निखिल बनर्जी (सितार वादक), श्रीमती शरन रानी (सरोद वादक) व इनके ही पुत्र आशीष खाँ व ध्यानेश खाँ हैं।

सन् 1974 में अली अकबर खाँ साहब को रवीन्द्र भारती विश्वविद्यालय कलकत्ता और ढाका विश्वविद्यालय बांग्लादेश ने संगीत कला में विशेष योगदान के लिए डाक्टर ऑफ लिटरेचर की मानद उपाधि से सम्मानित किया।

सन् 1963 में पद्मभूषण व 1966 में पद्मविभूषण दो बार राष्ट्रपति पुरस्कार भी आपको मिले। आपकी कैलीफोर्निया में एक संगीत संस्था भी चल रही है जो विद्यार्थियों को संगीत की शिक्षा प्रदान कर रही है।

पं0 रविशंकर–

उस्ताद अलाउद्दीन खाँ साहब की संगीत शिक्षा को विश्व भर में फैलाने वाले खाँ साहब के प्रमुख शिष्य विश्वविख्यात सितारवादक पं0 रविशंकर हुए।

सन् 1930 में रविशंकर अपने बड़े भाई श्री उदयशंकर जी के नृत्यदल के साथ पहली बार विदेश यात्रा पर गये।

उस्ताद अलाउद्दीन खाँ से रविशंकर जी ने सितार व गायन की शिक्षा ली। दिसम्बर सन् 1939 में इलाहाबाद संगीत सम्मेलन में अली अकबर खाँ साहब और रविशंकर जी की जुगलबंदी का एक कार्यक्रम हुआ जो कि इनका पहला सफल कार्यक्रम था। आल इण्डिया रेडियो लखनऊ से रविशंकर जी के कई कार्यक्रम 1939 से 1944 तक प्रसारित हुए। पं0 रविशंकर जी ने बम्बई में ही एक म्यूजिक सर्किल की स्थापना की। इस संस्था के माध्यम से इन्हें काफी सफलता मिली और प्राइवेट प्रोग्राम भी मिलने लगे जिससे इनकी आर्थिक समस्यायें कम होती गयीं।

इसके बाद रविशंकर जी ने इण्डियन पीपुल्स थियेटर एसोसिएशन में प्रवेश किया, जिसके माध्यम से इन्हें बैले संगीत में कार्य करने का अवसर मिला। इसके बाद इन्हें दो फिल्मों में संगीत देने का भी अवसर मिला। 'नीचा नगर' और 'धरती का लाल' इसमें संगीत देने के लिए उन्होंने भारतीय वाद्यों का ही प्रयोग किया।

फरवरी सन् 1949 में रविशंकर जी दिल्ली में ऑल इण्डिया रेडियो के डायरेक्टर पद पर नियुक्त हुए। दिल्ली में रहते हुए ही इन्होंने झंकार नामक एक संगीत सर्किल बनाया जो कि आज भारतीय कला केन्द्र के नाम से जाना जाता है। इसी समय पं0 जी ने अनेक वाद्य वृन्दों की भी रचना की।

सन् 1951 में रविशंकर जी को पाश्चात्य महान संगीतज्ञ यहूदी मैनुहिन से मिलने का अवसर मिला। बाद में इनके साथ रविशंकर जी के सितार व वॉयलिन की जुगलबंदी के अनेक कार्यक्रम भी होते रहे। सन् 1954 में रविशंकर जी भारतीय सांस्कृतिक दल के सदस्य के रूप में दो महीने के लिए सोवियत रूस गये। सन् 1963 में रविशंकर जी ने किन्नर स्कूल ऑफ म्यूजिक नामक स्कूल स्थापित किया। जहाँ इन्होंने अपने गुरु उस्ताद अलाउद्दीन खाँ साहब से सीखी हुई बीनकार घराने के ढंग से वाद्य संगीत की शिक्षा देने का निर्णय लिया।

पं0 रविशंकर जी के सितार वादन में अनेक विशिष्टतायें हैं– भावपक्ष व कलापक्ष का समन्वय इनकी प्रमुख विशेषता है। किसी भी राग को गहराई से प्रस्तुत करने व उसमें अपनी कल्पना शक्ति से स्वर विस्तार करने की अनूठी प्रतिभा इनके वादन में है। जोड़ के कार्य में इनकी निजी विशेषता है। सितार में लरज–खरज के सितार का प्रयोग व उस पर मीड़ का प्रयोग सर्वप्रथम इन्होंने अपने सितार वादन में आरम्भ किया। तीनों सप्तकों में द्रुतलय की ताने बजाना तथा मीड़, गमक, कृन्तन, मुर्की व जमजमे आदि का सुन्दर प्रयोग उनके वादन की विशेषतायें हैं।

पं0 निखिल बनर्जी–

उस्ताद अलाउद्दीन खाँ के शिष्य सुप्रसिद्ध सितारवादक श्री निखिल बनर्जी का आज भारतीय वाद्य संगीत में अपना विशिष्ट स्थान है।

उस्ताद अलाउद्दीन खाँ साहब से संगीत शिक्षा ग्रहण करने पर श्री निखिल बनर्जी के सितार वादन में कई विशिष्टतायें आ गयीं। श्री बनर्जी का स्वर लगाने का ढंग ही अनूठा था तथा उनकी विलम्बित लय की भी अपनी विशिष्टता थी। वादन में गम्भीरता, हाथ की तैयारी, सपाट तानों का अति द्रुत लय में प्रयोग व मीड़ गमक की पूर्ण तैयारी, उनके वादन में देखी जा सकती थी जिससे श्रोता इनके वादन को सुनकर चकित रह जाते थे। पं0 रविशंकर जी ने श्री निखिल बनर्जी की वादन कला के विषय में उनकी प्रशंसा में लिखा है– ''निखिल बहुत सधा हुआ बजाते हैं। मैं इनको अपने से अगली पीढ़ी का सबसे बड़ा कलाकार मानता हूँ।''[4]

पं0 पन्ना लाल घोष–

उस्ताद अलाउद्दीन खाँ साहब के शिष्य बांसुरी वादक स्व0 पं0 पन्नालाल घोष हुए।

16 वर्ष की आयु तक कसरत और संगीत ही पन्ना लाल जी का जीवन रहा। सन् 1928 में पन्ना लाल जी बेरिसाल छोड़कर कलकत्ता आ गये। कलकत्ता में उन्होंने जीविकोपार्जन के साथ–साथ संगीत साधना जारी रखी इसी दौरान संथाल वासियों ने उनहें उनके बलिष्ठ शरीर एवं मनोमुग्धकारी संगीत के लिए तीर–कमान भेंट किया जो एक प्रकार का दुर्लभ सम्मान माना जाता था।

कलकत्ता आकर पन्ना लाल जी का कठोर जीवन संग्राम आरम्भ हुआ। सन् 1930 ई0 में आपके पिता का स्वर्गवास हो गया। इसके बाद उन्होंने अपने पिता की परम्परा का निर्वाह करने के लिए सितार अपना लिया, किन्तु कुछ समय बाद वे पुनः बांसुरी वादन में लग गये। जीवनयापन के लिए उन्हें नलकूप कम्पनी, प्रवासी प्रेस एवं सत्यभाभा शिक्षण संस्थान में नौकरी करनी पड़ी, परन्तु ऐसे समय में उन्होंने अपनी संगीत साधना जारी रखी।

सन् 1934 में श्री पन्ना लाल घोष से अखिल भारतीय संगीत प्रतियोगिता में भाग लिया। इसी समय श्री अनिल विश्वास के गायन के साथ उनकी बांसुरी की युगलबही का रिकार्ड निकला जो कि बहुत ही लोकप्रिय हुआ। काजी नजरूल इस्लाम की कहानी पर निर्मित पाताल मंजरी में श्री घोष ने अपना बांसुरी वादन भी दिया। इनके कुछ अन्य रिकार्ड भी निकले जिससे संगीत निर्देशन राई चांद बड़ाल इनकी ओर आकृष्ट हुए। परिणामस्वरूप 1935 ई0 में श्री पन्नालाल घोष न्यू थियेटर्स में सम्मिलित हुए और 1938 ई0 तक उसी में कार्यरत रहे। न्यू थियेटर्स में उन्होंने बहुत ख्याति अर्जित की।

पं0 रविशंकर जी ने अपनी पुस्तक में श्री पन्ना लाल घोष की वादन कला के विषय में इस प्रकार लिखा है– ''श्री पन्ना बाबू 'जीनियस' थे, वे बांसुरी के बहुत से अंगों के पथ प्रदर्शक रहे हैं। इंसान मेहनत से क्या कुछ कर सकता है यह पन्ना बाबू दिखा गये हैं।''[5]

संदर्भ सूची–

1. संगीत मासिक पत्रिका, सं0 श्री लक्ष्मी नारायण गर्ग।
2. भारतीय संगीत के उन्नायक उस्ताद अलाउद्दीन खाँ, डा0 प्रभा जैन, पृ0सं0 60
3. ग्रेट मास्टर्स आफ हिन्दुस्तान, सुशीला मिश्रा, पृ0 60–61
4. भारतीय संगीत के उन्नायक उस्ताद अलाउद्दीन खाँ, डा0 प्रभा जैन, पृ0सं0 70
5. भारतीय संगीत के उन्नायक उस्ताद अलाउद्दीन खाँ, डा0 प्रभा जैन, पृ0सं0 69